भजनामृत

संकलन कर्त्ताः- संत श्री हरि

ई-मेल : santshrihari@gmail.com

www.meditationandyoga.in

मोबाईल : 09319412158 / 09810020570

प्रकाशक

संत श्री हरि योगा समिति

ऋषिकेश

पंजाब नेशनल बैंक, खाता संख्या : 0836021200000011

ई-मेल : santshrihari@gmail.com

www.meditationandyoga.in

मोबाईल : 09319412158 / 09810020570

© संत श्री हरि

प्रथम संस्करण : सितम्बर, 2010 (11000 प्रतियां)

मूल्य : कम से कम 10 मिनट का अध्ययन

साज-सज्जा : हरीशंकर मिश्रा, मो. 9810733318

मुद्रक : मेहरा ऑफसेट प्रेस, न. दिल्ली

दैनिक प्रार्थना

अब सौंप दिया इस जीवन का,
सब भार तुम्हारें हाथों में,
है जीत तुम्हारे हाथों में,
और हार तुम्हारे हाथों में॥
मेरा निश्चय बस एक यही,
इक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं।
अर्पण कर दूं दुनियाभर का,
सब प्यार तुम्हारे हाथों में। अब
जो जग में रहूं तो ऐसे रहूं,
ज्यों जल में कमल का फूल रहे॥
मेरे सब गुण-दोष समर्पित हों,
गोपाल तुम्हारे हाथों में॥ अब.
यदि मानस का फिर जन्म मिले,
तो तब चरणों का पुजारी बनूं।
इस पूजक की इक इक रग का,
हो तार तुम्हारे हाथों में॥ अब.
जब जब संसार का कैदी बनूं।
निष्कामभाव से कर्म करूं॥

फिर अन्त समय में प्राण तजूं।
साकार तुम्हारे हाथों में॥ अब.
मुझमें तुझमें बस भेद यही,
मैं नर हूं तुम नारायण हो॥
मैं हूं संसार के हाथों में,
संसार तुम्हारे हाथों में॥अब.

भगवान मेरी नैया

भगवान! मेरी नैया उस पार लगा देना।
अब तक तो निभाया है आगे भी निभा लेना॥

दल बल के साथ माया घेरे जो मुझको आकर
तो देखते न रहना, झट आ के बचा लेना॥

सम्भव है झंझटों में मैं तुमको भूल जाऊँ।
पर नाथ! कहीं तुम भी मुझको न भुला देना॥

तुम देव मैं पुजारी तुम इष्ट मैं उपासक।
यह बात अगर सच है सच करके दिखा देना॥

ॐ की महिमा

ॐ है जीवन हमारा, ॐ प्राणाधार है,
ॐ है कर्ता विधाता, ॐ पालनहार है,
ॐ है दुःख का विनाशक, ॐ सर्वानन्द है,
ॐ है बल तेजधारी, ॐ करुणानन्द है,

ॐ सबका पूज्य है, हम ॐ का पूजन करें,
ॐ ही के ध्यान से, हम शुद्ध अपना मन करें,
ॐ का गुरु मंत्र जपने से, रहेगा शुद्ध मन,
बुद्धि दिन पर दिन बढ़ेगी, धर्म में होगी लगन,
ॐ के नित जाप से, हमारा ज्ञान बढ़ता जायेगा,
अन्त में यह ॐ हमें, मुक्ति तक पहुँचायेगा।

कृष्ण गोविंद गोपाल गाते चलो

कृष्ण गोविंद गोपाल गाते चलो
मनको विषयों के विष से हटाते चलो
इंद्रियों के ना घोडे विषयों में अडे,
जो अडे भी तो संयम के कोडे पडे
तन के रथ को सु-पथ पर चलाते चलो॥ कृष्ण...
नाम जपते रहो, काम करते रहो
पाप की वासनाओं से डरते रहो
सद्गुणों का परम धन कमाते चलो॥ कृष्ण...
लोग कहते हैं 'भगवान आते नहीं'
रुक्मिणी की तरह हम बुलाते नहीं
द्रौपदी की तरह धुन लगाते चलो॥ कृष्ण...
लोग कहते हैं 'भगवान खाते नहीं'
भिल्लिनी की तरह हम खिलाते नहीं
शाकप्रेमी विदुरसम जिमाते चलो॥ कृष्ण...
दुःख में तडपो नहीं सुख में फूलो नहीं
प्राण जाये मगर धर्म भूलो नहीं
धर्म धन का खजाना लुटाते चलो॥ कृष्ण...
वख्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
हम भी पायेंगे प्रभु को कभी ना कभी
ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो॥ कृष्ण...

उठ जाग मुसाफिर

उठ जाग मुसाफिर भोर भई
अब रैन कहाँ जो सोवत है
जो सोवत है सो खोवत है
जो जागत है सो पावत है

टुक नींद से अँखियाँ खोल जरा,
ओ गाफिल, प्रभु से ध्यान लगा
यह प्रीत करन की रीत नहीं,
प्रभु जागत है, तू सोवत है।

अब जान, भुगत करनी अपनी
ओ पापी पाप में चैन कहाँ?
जब पाप की गठरी सीस धरी,
फिर सीस पकड क्यों रोवत है?

जो कल करे सो आज कर ले
जो आज करे सो अब कर ले
जब चिडियन खेती चुग डाली,
फिर पछताये क्या होवत है?

इतना तो करना स्वामी

इतना तो करना स्वामी, जब प्राण तन से निकले।
गोविंद नाम लेकर, तब प्राण तन से निकले॥

श्रीगंगाजी का तट हो, यमुना का बँसी वट हो।
मेरा साँवरा निकट हो, जब प्राण तन से निकले॥

पीतांबरी कसी हो, छवि ये ही मन बसी हो।
होठों पे कुछ हँसी हो, जब प्राण तन से निकले॥

सिर सोहना मुकुट हो, मुखडे पे काली लट हो।
यही ध्यान मेरे घट हो, जब प्राण तन से निकले॥

केसर तिलक हो आला, गल बैजयंती माला।
मुख चंद्र-सा उजाला, जब प्राण तन से निकले॥

नेत्रों में प्रेम-जल हो, मेरे मुख में तुलसी-दल हो।
अंतिम समय सफल हो, जब प्राण तन से निकले॥

उस समय शीघ्र आना, नहीं श्याम भूल जाना।
बँसीकी धुन सुनाना, तब प्राण तन से निकले॥

रामजीरो नाव म्हाने

रामजीरो नाव म्हाने मीठो घणो लागे रे ॥

रामजीरो मूंग चावळ रामजीरी बाजरी।
रामजीरो घरको धंधो रामजीरी हाजरी।
रामजीरी परसादीसु पाप सारा भागे रे॥

भाई-बंधु टाबर टोली रामजीरा छोकरा।
माय-बाप, दादा-दादी, रामजीरा डोकरा।
सगळा मिलकर रेवा म्हें तो रामजीरा सागे रे॥

रामजीरा हेली नोहरा रामजीरा झूँपडा।
रामजीरा खेतामाही रामजीरा रुँखडा।
रामजी है पाछे म्हारा रामजी है आगे रे॥

रामजीरी घर की कुंजी रामजी लगावणिया।
रामजीरो लेणो देणो रामजी चुकावणिया।
शरणागतरी सारी चिंता रामजीने लागे रे॥

रामजीरी लीला गावा, रामजीरी कीरती।
बोले चाले दीखे सोही रामजीरी मूरति।
रामजीरा संत आया भाग म्हारा जाग्या रे॥

उसे इन्सान कहते हैं!

किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये, उसे इन्सान कहते है॥

कभी धनवान है कितना, कभी इन्सान निर्धन है।
कभी सुख है, कभी दुख है, इसी का नाम जीवन है।
जो मुश्किल में न घबराये, उसे इन्सान कहते हैं॥

यह दुनिया एक उलझन है, कहीं धोखा कहीं ठोकर।
कोई हँस-हँसके जीता है, कोई जीता है रो-रोकर।
जो गिरकर फिर सम्हल जाये, उसे इन्सान कहते हैं॥

अगर गलती रुलाती है, तो राहें भी दिखाती है।
मनुज गलती का पुतला है, जो अक्सर हो ही जाती है।
जो कर ले ठीक गलती को, उसे इन्सान कहते हैं॥

यों भरने को तो दुनिया में, पशु भी पेट भरते हैं।
जिन्हें इन्सान का दिल है, वे नर परमार्थ करते हैं।
पथिक जो बाँटकर खाये, उसे इन्सान कहते हैं॥

वैष्णव जन तो तेने रे कहिए

वैष्णव जन तो तेने रे कहिए, जे पीड पराई जाणे रे।
परदुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे ॥

सकळ लोकमां सहुने वंदे, निंदा न करे केनी रे।
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन धन जननी तेनी रे ॥

समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे।
जिव्हा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे ॥

मोह माया व्यापे नहीं जेने, दृढ वैराग्य जेना मनमां रे।
रामनामशुं ताळी रे लागी, सकळ तीरथ तेना तनमां रे ॥

वण लोभी ने कपट रहित छे, काम क्रोध निवार्या रे।
भणे नरसैयो तेनु दरशन करता, कुळ इकोतेर तार्या रे ॥

राधारमण कहो

जिस हाल में, जिस देश में, जिस वेष में, रहो ...।
राधारमण ...राधारमण ...राधारमण कहो ॥

जिस काम में, जिस धाम में, जिस नाम में रहो ...।
राधारमण कहो॥

संसार में, परिवार में, घरबार में रहो....।
राधारमण कहो ॥

जिस रंग में, जिस ढंग में, जिस संग में रहो....।
राधारमण कहो ॥

जिस देह में, जिस गेह में, जिस स्नेह में रहो....।
राधारमण कहो ॥

जिस राग में, अनुराग में, वैराग में रहो....।
राधारमण कहो ॥

जिस मान में, सम्मान में, अपमान में रहो...।
राधारमण कहो ॥

जिस योग में, जिस भोग में, जिस रोग में रहो....।
राधारमण कहो ॥

इहलोक में, परलोक में, गोलोक में रहो....।
राधारमण...राधारमण...राधारमण कहो ॥

॥सीताराम सीताराम सीताराम कहिये॥

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये।
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये॥

मुख में हो राम नाम, राम सेवा हाथ में।
तू अकेला नाहीं प्यारे राम तेरे साथ में॥
विधि का विधान जान हानि लाभ सहिये।
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये॥

किया अभिमान तो फिर मान नहीं पायेगा।
होगा वही प्यारे जो श्रीराम जी को भायेगा॥
फल की आशा त्याग शुभ काम करते रहिये।
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये॥

जिन्दगी की डोर सौंप हाथ दीनानाथ के।
महिलों में राखे चाहे झोपडी में वास दे॥
धन्यवाद निर्विवाद राम राम कहिये।
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये॥

आशा एक रामजी से, दूजी आशा छोड दे।
नाता एक रामजी से, दूजा नाता तोड़ दे॥
साधु संग, राम रंग, अंग अंग रंगिये।
काम रस त्याग प्यारे राम रस पीजिये॥

मैं नहीं मेरा नहीं

मैं नहीं मेरा नहीं यह, तन किसी का है दिया।
जो भी अपने पास है वह सब किसी का है दिया॥

देनेवाले ने दिया वह
भी दिया किस शान से
मेरा है यह लेनेवाला
कह उठा अभिमान से
मैं मेरा यह कहनेवाला मन किसी का है दिया॥

जो मिला है वो हमेशा
पास रह सकता नहीं
कब बिछुड जाए ये कोई
राज कह सकता नहीं
जिंदगानी का खिला मधुवन किसी का है दिया॥

जग की सेवा खोज अपनी
प्रीति उनसे कीजिए
जिंदगी का राज है यह
जानकर जी लीजिए
साधना की राहपर साधन किसी का है दिया॥

आयुष, कर्म, वित्त्म् च विद्या निधमेव्च।
पंचतानि सृज्यन्ति गर्भस्थैव् देहिनाम्॥

शास्त्र कहता है कि जन्म का समय, जीव का कर्म, धन का अर्जन, शिक्षा ज्ञान और मृत्यु तो शरीर में गर्भ धारण के समय ही सृजित हो जाते हैं। फिर हमको चिंता क्यों? तनाव किस लिये? संतान को लेकर भविष्य की चिन्ताओं में ही सारा जीवन चला जाता है और उसे पूरा करने के चक्कर में ही बीमारी, भ्रष्टाचार इत्यादि से समाज और देश ग्रसित है। अत: मेरे विचार से हम सबों को सिर्फ काम काम काम पर ही ध्यान देना चाहिए। बाकी परमात्मा पर छोड़ देना चाहिए।

(कर्मयोगी श्री राज कुमार त्यागी जी
के सतसंग से उधृत)

With Best Compliments From

FOR TRADE ENQUIRIES CONTACT : 09830014404 (MOB.)
E-mail : treat@vsnl.com